

# **HOME ASSIGNMENT**



**DR. B. K. B COLLEGE, PURANIGUDAM  
DEPARTMENT OF EDUCATION  
SESSION-2023-24**

**SUBMITTED TO :**  
**BIJU BORA**  
**GHANASHYAM TAID**  
**Ranjeeta Kakati**  
**Janhangir Husain**

**SUBMITTED BY :**  
**NAME: TINKU MONI GAYAN**  
**CLASS: B.A 1<sup>ST</sup> SEMESTER**  
**ROLL NO: 99 / 368**  
**MEDIUM -ASSAMESE**

## Acknowledgement (স্বীকৃতি)

মৈ মোৰ শ্ৰদ্ধাৰ শিক্ষক - শিল্পযোগী মুকুলক (D.O.E) বিন্দুবাদ  
 জনপুরো মোক এই Assignment টো কঢ়িও দিয়াও থাএ।  
 তেওঁজোকে মোক এইটো বিষয়ত তেওঁজোকৰ দাব প্ৰদান  
 কৰাব বাবে বিন্দুবাদ আপৱ কঢ়িছো। Assignment এই  
 কিংবলে তেওঁয়া কঢ়ে মৈ বিষয়ে বিভিন্ন উপলব্ধ দিয়াৰ  
 বাবে মৈ মোৰ শ্ৰদ্ধাৰ জ্ঞান - বাবি দেও মুকুলক হৃতজ্ঞতা  
 আপৱ কঢ়িছো লগতে মোৰ Assignment ঘৰ আভণ্ণু  
 কঢ়িনো।

## ଆବଶ୍ୟକି

ଶିକ୍ଷା ହେଲେ ଏକ ଜୀବନର୍ଥାବି ତଳା ପ୍ରକିଳ୍ୟା । ସି ଶାବୁଦ୍ଧ ଏବନ୍ତ ଜୟ ହୋଇଥେ ପତା ଆବଶ୍ୟକ କଣି ମୃତ୍ୟୁ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚଲି ଥାଏ । ମାନ୍ଦ ଅଞ୍ଜତାର ଆବଶ୍ୟକିତ ପାଠୀରେ ଶିକ୍ଷାତ ଆବଶ୍ୟକି ହେଲେ ଆବଶ୍ୟକିତ ମାନ୍ଦ ଅଞ୍ଜତା ବଢ଼ି ଥାଗଲେ ଶିକ୍ଷାଓ ବଢ଼ି ଥାକିର । ପ୍ରଥିତୀତ ହୃଦୟରେ ହୋଇଥାଏ ଲାଗେ ଲାଗେ ଏବଂ ଶିଖିବେ ପାଠିବେ ଏବଂ ଲାଗିଥାଏ ମଧ୍ୟା ଯୋଜନା କରିବିଲେ ପିଲେ । ଶିକ୍ଷାତ ହାତାଶାବୁଦ୍ଧ ଅଞ୍ଜର ଆବଶ୍ୟକ ଦୂର କଣି ଆନନ୍ଦ ପୋଷତ ଦିଲାଏ ପାଏ । ଦତ୍ତାଚଲତା ଏବନ ଶାବୁଦ୍ଧ ମର୍ତ୍ତ୍ୟ ନାମତିକ କଣି ଏବଂ ଛାଲାଏ ତାଁତ ପ୍ରଦାନ ହୃଦୟକା ପାଲନ କଣି ଶିକ୍ଷାରେ । ଆଚୀନ ମନ୍ଦମତିରେ ଆବଶ୍ୟକ କଣି ରୁତିଶାନ ମର୍ଯ୍ୟାନେ ଶିକ୍ଷାରେ ଶାବୁଦ୍ଧ ପ୍ରାତିତ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ବନ୍ଧି ଉପରେ ।

ହୁଏ ଏଇ Assignment ମୌତ ଶିକ୍ଷାତ ଅର୍ଥ, ଶିକ୍ଷାତ ପାଠିମତ, ଅବୁଧାମନ ଅର୍ଥ, ବ୍ୟାପି ଆବଶ୍ୟକତାର ବୈପାତିକ ଦ୍ୱାରିକାର ବିଷୟେ ଆଲୋଚନା କରିବ ।

① শিক্ষার অর্থ ইল :— বৃত্তশক্তির দিশে বিশেচনা করিলে দেখা যায় যে শিক্ষা অকটো লাইন জাপান কেবোর্ডও অন্ধে পূর্ণ আশিঙ্কে ।

'E' আৰু 'Ducō' ইটা লাইন অক আৰু একে অক ইটাৰ পৰা শিক্ষার ইঞ্জোজী প্ৰতিশব্দ Education-ৰ চেৎপতি ঝুলি জনা যায় । 'E' অন্ধে অর্থ ইল 'out of' বা 'য'ৰ পৰা আৰু 'Ducō' অর্থ ইল 'lead' বা ফৈছে আওৱাছি যাওঁ । অর্থাৎ যৰ পৰা মৰ্ক আওৱাছি যাওঁ তা বিকাশ লাভ কৰ্তৃ স্বয়ংকৰ ইল শিক্ষা ।

আকো আন এক লাইন অক 'Educare'-ৰ পৰাও শিক্ষা অন্ধে চেৎপতি ঝোঁড়া ঝুলি জনা যায় । 'Educare' অন্ধে অর্থ ইল 'to nourish' বা 'to bring up' অর্থাৎ লালন-শালন কৰা বা ঝুলি আলি দিবা । অর্থাৎ লক্ষ্যে নিহিত শিক্ষক লালন-শালন কৰাছি ইল শিক্ষা ।

আন এক লাইন অক 'Educare'-ৰ পৰাও শিক্ষা অন্ধে চেৎপতি ঝুলি জনা যায় যাৰ অর্থ ইল 'to lead out' বা 'to draw out' অর্থাৎ বিকল্পাবি তোলা । উশার অর্থ ইল শিক্ষক আজ্ঞা বীৰণকৰে তা অনুভূতি বিকল্পাবি তোলা ।

'Educatum' ইল লাইন জাপান আন এটা অক যাত পৰাও শিক্ষা অন্ধে চেৎপতি ঝোঁড়া ঝুলি জনা যায় । Educatum অন্ধে অর্থ ইল 'the act of teaching or training' অর্থাৎ শিক্ষাদান তা প্ৰশিক্ষণ কৰ্ত্তব্য ।

আকো প্ৰাচীন জাপানীয় শিক্ষাবিদগুলৰ ঘৃতে 'শিক্ষা' (Skikasha) অকটো সংস্কৃত জাপান 'শাস' (shas) শাস্ত্ৰ পৰা আশিঙ্কে যাত অর্থ ইল 'to discipline' বা 'to govern' অর্থাৎ আদৰণ লিয়নুৰ কৰা । আন এক সংস্কৃত অক 'বিদ' বিদে পৰা শিক্ষা অন্ধে চেৎপতি ঝোঁড়া ঝুলি ক'ৰ মাত্ৰ যাত অর্থ ইল 'to know' অর্থাৎ জ্ঞানিত্বে বিচৰা । অর্থাৎ জ্ঞান আৰু তাৰ কৰা তাৰ

ষ- आमित लाग्ना प्रक्रियाई शैल शिक्षा ।

शिक्षाप्रविषेष शैल : शिक्षाप्रविषेष वा प्रतिसंयुक्त वा  
वाले शिक्षाई साधने लाग्ना विषयवस्तुसमूहले बुद्धाग्न इय ।  
शिक्षाप्रविषेष शिक्षाप्रविषेष अनुभवाता आकृ वर्णवूद्धी शिक्षण  
अनिष्टिताङ्के आधुनि लय । एषांतो भ्रत्य मे, शिक्षाप्रविषेष  
अति व्यापका आकृ वर्णल ।

शिक्षाप्रविषेष विषये उल्लिखन आलोचना करा शैल :

① शिक्षाप्रविषेष दर्शन : शिक्षाप्रविषेष दर्शनका अनुरूप रूप ।

अहेन दृश्यते शिक्षाप्रविषेष लक्ष्य उद्देश्य निषिद्धन रूपे दर्शन ।

दार्थनियत्यकलव वा दर्शनव यठयन अविश्वेष शिक्षाप्रविषेष विश्वरूप  
विकाश अस्तु लय । दर्शने शिक्षाप्रविषेष नीति, जादर्थ, माठ्यज्ञन,  
शिक्षाप्रविषेष नीति, अनुभावन आदित विशेष प्रणालीलाय ।  
शिक्षाप्रविषेष अधीनत विश्व दार्थनिक अस्तु दायगोपत्येष्टि का  
तात्पर्यगोपत्येष्टि विश्वेषन रूपा इय ।

② शिक्षाप्रविषेषविज्ञान : शिक्षाप्रविषेषविज्ञान शिक्षाप्रविषेष  
सम्बन्ध अस्तु विश्वेषन रूप । शिक्षाप्रविषेष एक विषय यि  
अम्बाज्यव व्याप्ति प्राचित । अस्येहे शिक्षाप्रविषेष लक्ष्य, शिक्षाप्रविषेष  
नीति, अनुभावन जादि अम्बाज्यव अस्तु उपर्युक्त विषय ।  
अस्य विकाशत अम्बाज्यव अस्तु, अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य  
विकाशत अम्बाज्यव अस्तु शिक्षाप्रविषेष उपर्युक्त विषय रूपा  
अस्यान रूपा इय ।

③ विश्वप्रविषेषविज्ञान : एसे विज्ञानव अधीनत विश्व विज्ञान  
लोकलव योगे तेनेते रूप सम्बन्धते मालाम्बु शिक्षा प्रदान  
रूपते शाब्दि अस्य विषये अस्यान रूपा इय । शिक्षाप्रविषेषविज्ञान  
अनुप्रविषेषविज्ञानका लोकलव अस्यान योगे शिक्षाप्रविषेष  
विकाश शाब्दिरूपते लाग्ने ।

ii) ବୈଷ୍ଣ୍ଵିକ ପ୍ରଭାସନ :- ପିଙ୍ଗାର ଏଇ ବିଳାଗେ-ବୈଷ୍ଣ୍ଵିକ ପ୍ରଭାସନର ଲମ୍ବତ ଅଣିତ ବିଭିନ୍ନ ନୀତି, ଜୀବନ ଆବ୍ଶ୍ୟକ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ବିଷୟେ ଅର୍ଥଯନ କରିବାକୁ ବୈଷ୍ଣ୍ଵିକ ପ୍ରଭାସନର ନୀତି, ପରିବହନ, ବିଦ୍ୟାଲୟର ନିୟମକୁ, ଶିକ୍ଷକ ଆବ୍ଶ୍ୟକ କର୍ମଚାରୀର ନିୟମକୁ, ଶିକ୍ଷକର ଦାସିତ ଆବ୍ଶ୍ୟକ କର୍ତ୍ତତ୍ୟ, ବୈଷ୍ଣ୍ଵିକ ମାନ୍ୟତା, ବିଦ୍ୟାଲୟ ନିୟମକୁ, ଶିକ୍ଷକ ଆବ୍ଶ୍ୟକ କର୍ମଚାରୀର ନିୟମକୁ, ଶିକ୍ଷକର ଦାସିତ ଆବ୍ଶ୍ୟକ କର୍ତ୍ତତ୍ୟ, ବୈଷ୍ଣ୍ଵିକ ମାନ୍ୟତା, ବିଦ୍ୟାଲୟ ପାଠିଗାଲକା ଆଦି ଦିବ୍ୟତ ଅର୍ଥଯନ ଏଇ ବିଳାଗତ କାତା ଛୁଟ ।

⑤ ଶୈଖିକ ପାଠିନାମନ ଆବ୍ଲେଖ ଶୂଳ୍ୟାଯନ - ଶିକ୍ଷାର ସମ୍ପ୍ରଦୟାନ୍ତରୀକ୍ଷଣାତ୍ମକ  
ଶୂଳ୍ୟାଯନ ଅତି ଆବଶ୍ୟକ ଦିଷ୍ଟ । ଏହି ବିଜ୍ଞାନତ ଶିକ୍ଷାତ କିମ୍ବା  
ଆବ୍ଲେଖ ଶୂଳ୍ୟାଯନ ବନ୍ଦିର ଲାଗେ, ଅଭାଲତା ଦା ବିମାଳତାଧ  
ମାପକାରୀ ଆଦିତ ବିଷୟେ ଅର୍ଥମନ କାହେ ।

vi) ଛୁଲନାଷୂଳକ ଶିକ୍ଷା + ଛୁଲନାଷୂଳକ ଶିକ୍ଷାଇ ବିଳିନ୍ଦ ଦେଖିବ ଶିକ୍ଷା  
ଯତ୍କ୍ଷ୍ଵା ଅବୁଜବି କଣି ତିଜ ଦେଖିବ ଶିକ୍ଷାର ମାନ ଟୁବ୍ରତ କଗାତ  
ମରାଯ କଣା । ଶିକ୍ଷାର ଏହି ବିଳଗତ ବିଳିନ୍ଦ ଦେଖିବ ଶିକ୍ଷାର  
ଅଣ୍ଗଠେତ, ଲକ୍ଷ୍ୟ, ପାଠ୍ୟକର୍ମ, ଲୀତି, ମରାଳତା ଆଦିର ବିଷଯେ ଅଠୟନ  
କଣେ ।

၇။ ଶିଷ୍ଟାତ ରୁତଜୀ :- ଶିକ୍ଷାତ ରୁତଜୀ ଅର୍ଥମନ୍ତର ହାତା ଅଣିତଠ ଖୈପ୍ରିକ  
ବଢ଼ିଛାତ ବିଷୟେ ବିଷ୍ଵଦଳରେ ଜ୍ଞାନିତ ପାତା ଯାଏ । ଶିକ୍ଷାତ ଏହି ବିଜ୍ଞାନ-  
ପ୍ରାଚୀନ ଗାଲର ଲାଗୁତେ ଛନ୍ଦଗାଲ ଆଶ ଆଧୁନିକ ଗାଲ ଶିକ୍ଷାତ  
ଗାଁରିନି, ଶିକ୍ଷାତ ଦର୍ଶନ, ଖୈପ୍ରିକ ପ୍ରଚେଦୋ, ଖୈପ୍ରିକ ଟିକ୍କାବିଦ୍ୟାକାଳର  
ଦର୍ଶନ ଆଦିତ ବିଷୟେ ଜ୍ଞାନିତ ପାତା ଯାଏ ।

**VIII** ଅଧିକ ମୟୁରୀ : ଆଗ ଆନ ହେଉଥିଲେ ପଢ଼େ ଯିବ୍ରାହିତରେ ବିଭିନ୍ନ ମୟୁରୀରେ ଲଭ୍ୟ ହୁଏ । ଏହି ବିଜାନେ ଯିବ୍ରାହିତ ଲଭ୍ୟ ବିଭିନ୍ନ ମୟୁରୀ, ଯେଣେ - ଆର୍ଦ୍ରିକ ମୟୁରୀ, ଆବିଜୁନୀନର୍ଥର ମୟୁରୀ ଆଦିତ ବିଷମେ ବିଧିଦଶ୍ରେ ଅଠିଯନ କରେ ।

② अनुभासव अर्थ है :- अनुभासन अथवा इष्टवाली प्रतिष्ठान  
है जो 'Discipline'। ऐसे अपेक्षा लौटील लाभाव "Disciplina" अथवा  
पठा केंपाचि है जो याव अर्थ है - "Disciple" अर्थात् पिष्ठ ।  
अर्थात् उक्त प्रति पिष्ठाव व्यापत्त एमोजन थेहा आधुनिकर्णत  
व्याप्त है जो अनुभासन । आणो आव एकाव पिष्ठाति दत्त व्यापत्त  
Discipline अपेक्षा लौटील अप्य "Discipulus" पाठा आविष्ट याव  
अर्थ है "to learn" अर्थात् प्रश्नीय । अनुभासन है जो  
किंवान नीति-विषयाव मवावि ।

अनुभासन है जो आविष्ट आठ-डिग्रीका प्रतिष्ठानत एक  
प्रक्रिया । इह है एक त्यक्ता या समाज विकासाव व्यापत्त व्यापत्त  
नीति-विषयाव मालेते पठिचालित व्यापत्त । समाज आठ डिग्री  
हेतु अनुभासनत जिमित्तेवे सुख्ख्यावलित व्यापत्त आवादित  
पाठे । आवात जीवन प्रतेकांगो दिव्यते अनुभासव  
प्रव्याज्ञीयता आव ।

अनुभासने एकिव आववक्ता विष्ठन वाठात, सुआज्ञास  
गेल वाठात, लीति-विष्ठ आवि चलाव छुट्टत सवाय वाठात ।  
एकिव दिव्यते पठा अनुभासने एकिव अवृत्तिमृत्त विष्ठन  
व्याप्तेते निजते शुद्ध दिव्यते शुद्ध घेलाकूळावे आवगाढि घोलात  
सवाय वाठात ।

आस्ति विष्ठिका द्वामिळा है :- आस्ति प्रदानव पिष्ठा  
स्त्रेत एव उक्तस्त्रूर्ध्वर्द्धमिळा आव । एव शुत्रवि कालवे पठा  
व्याप्ति प्रदानव व्यक्त्वा चलि आविष्ट । वैशात जिमित्ते पिष्ठावृष्टीन  
समृद्धत अनुभासन आठ-शुद्धला ठोक्टे ठेवाव्य । पिष्ठनत पठा  
भोवा व्याप्ति अम्यत द्वात्र-जातीमठले निजते तेवा कामत पठा  
वित्त बाटे । वागले नावष चिन्तातिप अवानीवे तेवा ये विष्ठावकल  
अप्पिपक्ष आठ विष्ठावीन । तेऊंजातक मदि निजते है जा अनुभासि

कर्म वर्णित दिशा क्रम लेति या तेउलाके लिज्जत विनद लिखुमाति  
आनिव । आठठव रूप्लोट्टनष्ठ खेष देनाय स्वसंग्रहे पिष्टुल  
व्याप्ति अदान वर्णित लागे । दोषत अनुपात अनुपति व्याप्ति  
पदाव काठिले ई अचिक्र मळप्रबृह्म । अठीत्त विष्णावृह्मात  
दण्डे फणीठ व्याप्ति वर्तमाव विष्णात अदाव काठा नवय । मला -  
विल्लानिक दिव विठ्ठना कठि विष्टुल ज्ञान-ज्ञानीठ व्याप्ति अदाव  
काठा र्हेति । र्हठमान विष्णा छ्यात विल्ल ईत्तरत अवश्य  
मेन ल्खेगीलोगीठ विल्ल अवश्य, नाणीक्षात अवश्य, तिठ्बुठा  
अवश्य र्हेत्यादिष्ठ मळत ज्ञान-ज्ञानीठ इव इताध्याध्यासु छ्ये  
माठा देधा याय । अन्नैत्तरत विल्लमाव भिष्टिर्ह्य ताठ शिति द्वितित  
ज्ञान-ज्ञानीठ व्याप्ति भिष्टिर्ह्ये चेन्मूळ विल्लव्यतात्तरे अचिक्र  
अप्योजन । अवश्य र्हेत्युठल भिष्टिर्ह्ये नाठा तेउलाके ठ  
क्षुद्र व्यथेहे आउवाई योगीठ भव देधुणाठ लागे ।

अप्युष पूरुषक्षात्त विष्टिका इविका इव्वल :- विष्णात व्याप्ति आठ  
शुभक्षात्त रुप्लोर्हे उव्वस्त्वर्ह द्विविळ रवून काठे । मलात्तिद  
आठ विष्णाविदमरुलेऽ व्याप्ति आठ शुभक्षात्त द्विविळाठ शीकाठ  
काठिक्र । विष्णाशीकाठलाठ अर्हिष्ठोति कठि चेन्मूळ व्यथेते  
जास्तर्हाठे विष्णात व्याप्ति आठ शुभक्षात्त द्विविळ एव शीकाय ।  
देहा काश्वर भिष्टिव्यति स्वसंग्रहे व्याप्ति अदाव गठि एविष्टते ज्ञेर्हे  
काश्वर शुब्रवाह्यि द्यागीठ माणीठ विष्णाशीका ठाठी विदाव काठा  
क्षुद्र शुब्रवाह्यि आल गाम्हर वाठे शुभक्षात्त अदाव नाठि  
ल्लिष्टत अदाव कठि शुब्रवाह्यि जाठ ठानि आल वाठिठठ गाठे  
उड्याव अदाव नाठा इय । ज्ञानात्तजाठे बाक काठा आवाठ  
प्रवृत्तिप्रवृत्ति अव्लोट्टन वाठाठ वाठे व्याप्ति अप्योज काठा इय ।  
व्याप्ति आठ शुभक्षात्त ठाठशात्त मळत विष्णाबूझीत विष्टुल  
व्याप्ति आठ शुभक्षात्त बाहिर नाठे । अर्हव्यत व्याप्ति या शुभक्षात्त अविग्याय  
प्राहाणु अवकाठ काठा देधा याय । अर्हेवात्त असो शीघ्रावक्षात्त  
विष्टुल अर्हे रुप्लो अप्योज काठा द्विति ।

\* ପ୍ରତ୍ୟୁଷଜ୍ଞୀ :- କାଲିତା, ଏଁ, ଟେଟିଲ, ଚନ୍ଦ୍ରବୀଯା, ବସା, ଏଁ, ଶୋନାଳୀ, ଶର୍ମା,  
ଅଶ୍ଵବାଦିତା (୨୦୨୩) : ଶିକ୍ଷାବ ନୀତି, ଶାନ୍ତି ପ୍ରକାଶନ, ପାନ୍ୟଜ୍ୟାତ,  
ଶର୍ଵାଜୀନୀ - ୧

\* ମାନ୍ୟବନି :- ଏହା ମୋର ବାବେ ଏକ ଜାତ ଅନ୍ତିତା ଯେ ଛତ୍ର  
ଏବଂ ବିଷୟବ ଓପରତ ଦିଯା କାନ୍ଦିଲୋ କବିତ ପାଠିଲୋ । ଯତେ  
ଏହି କାନ୍ଦିଲୋ ଜୀବନଦିଧେ ମନ୍ଦିର କବିତର ବାବେ ଯି ଅଳକେ ମୋର  
ମହାୟ ମରୁଘୋଗିତା କବିତିରେ ଘର୍ଷି ଅଳକାକେ ଧିନ୍ୟତାଦ ଜୁଣ୍ଡିଲୋ ।